तं संजदस्स वा अणुत्तरविमाणवासियदेवस्स वा। तस्स आउववेयणा भावदो उक्कस्सा।।१९।।

उसका सत्त्व संयतके होता है अथवा अनुत्तरविमानवासी देवके होता है, अतएव उसके आयु कर्मकी वेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है।।१९।।

'तं संजदस्स वा ' इति वुत्ते अपुव्व-अणियट्टि-सुहुमउवसामगाणं उवसंतकसायाणं पमत्तसंजदाणं च गहणं। कधं पमत्तसंजदेसु उक्कस्साणुभागसत्तुवलद्धी? ण एस दोसो, आउअस्स उक्कस्साणुभागं बंधिदूण पमत्तगुणं पडिवण्णस्स तदुवलंभादो। संजदासंजदादिहेट्ठिमगुणट्ठाणजीवा उक्कस्साणुभागसामिणो किण्ण होंति? ण, उक्कस्साणुभागेण सह आउवबंधे संजदासंजदादिहेट्ठिमगुणट्ठाणाणं गमणाभावादो। उक्कस्साणुभागं बंधिय ओवट्टणाघादं घादिय पुणो हेट्ठिमगुणट्ठाणाणि पडिवण्णे संते उक्कस्साणुभागे सामित्तं किण्ण होदि त्ति वुत्ते ण, घादिदस्स अणुभागउक्कस्सत्तविरोहादो। उक्कस्साणुभागे बंधे ओवट्टणाघादो णत्थि त्ति के वि भणंति। तण्ण घडदे, उक्कस्साउअं बंधिय पुणो तं घादिय मिच्छत्तं गंतूण अग्गिदेवेसु उप्पण्णदीवायणेण वियहिचारादो महाबंधे आउअउक्कस्साणुभागंतरस्स उवड्ढपोग्गलमेत्तकालपरूवणण्णहाणुववत्तीदो वा।

'वह संयतके होता है' ऐसा कहनेपर अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायिक उपशामकोंका तथा उपशान्तकषाय व प्रमत्तसंयतोंका ग्रहण किया गया है।

शंका -- प्रमत्तसंयतोंमें उत्कृष्ट अनुभागका सत्त्व कैसे पाया जाता है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आयुके उत्कृष्ट अनुभागको बाँधकर प्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके उसका सत्त्व पाया जाता है।

शंका -- संयतासंयतादिक नीचेके गुणस्थानोंमें स्थित जीव उत्कृष्ट अनुभागके स्वामी क्यों नहीं होते?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, उत्कृष्ट अनुभागके साथ आयुको बाँधनेपर संयतासंयतादिका अधस्तन गुणस्थानमें गमन नहीं होता।

शंका -- उत्कृष्ट अनुभागको बाँधकर अपवर्तनाघातके द्वारा घात कर पश्चात् अधस्तन गुणस्थानोंको प्राप्त होनेपर उत्कृष्ट अनुभागका स्वामी क्यों नहीं होता?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, घातित अनुभागके उत्कृष्ट होनेका विरोध है।

उत्कृष्ट अनुभागको बाँधनेपर उसका अपवर्तनाघात नहीं होता, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। किन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, ऐसा माननेपर एक तो उत्कृष्ट आयुको बाँधकर पश्चात् उसका घात करके मिथ्यात्वको प्राप्त हो अग्निकुमार देवोंमें उत्पन्न हुए द्वीपायन मुनिके साथ व्यभिचार आता है, दूसरे, इसका घात माने बिना महाबन्धमें प्ररूपित उत्कृष्ट अनुभागका उपार्ध पुद्गल परिवर्तनप्रमाण अन्तर भी बन नहीं सकता।

अणुदिसादि हेट्ठिमदेवेसु पडिबद्धाउए बज्झमाणे उक्कस्साणुभागबंधो ण होदि त्ति जाणावणट्ठं 'अणुत्तरविमाणवासियदेवस्स' इति भणिदं। उक्कस्साणुभागेण सह तेत्तीसाउअं बंधिय अणुभागं मोत्तूण ट्ठिदीए चेव ओवट्टणाघादं कादूण सोधम्मादिसु उप्पण्णाणं उक्कस्सभावसामित्तं किण्ण लब्भदे? ण, (अणुभागघादेण) विणा आउअस्स उक्कस्सट्ठिदिघादाभावादो।

अनुदिश आदि नीचेके देवोंसे सम्बन्ध रखनेवाली आयुको बाँधते हुए उत्कृष्ट अनुभागका बन्ध नहीं होता, यह बतलानेके लिए 'अनुत्तरविमानवासी देवके' यह कहा गया है।

शंका -- उत्कृष्ट अनुभागके साथ तैंतीस सागरोपम प्रमाण आयुको बाँधकर अनुभागको छोड़ केवल स्थितिके अपवर्तनाघातको करके सौधर्मादि देवोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके उत्कृष्ट अनुभागका स्वामित्व क्यों नहीं पाया जाता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, (अनुभागघातके) विना आयुकी उत्कृष्ट स्थितिका घात सम्भव नहीं है।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सा।।२०।।

उससे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना है।।२०।।

सुगममेदं।

यह सूत्र सुगम है।

सामित्तेण जहण्णपदे णाणावरणीयवेयणा भावदो जहण्णिया कस्स?।।२१।।

स्वामित्वसे जघन्य ज्ञानावरणीयकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है? ।।२१।।

सुगममेदं।

यह सूत्र सुगम है।

अण्णदरस्स खवगस्स चरिमसमयछदुमत्थस्स णाणावरणीयवेयणा भावदो जहण्णा।।२२।।

अन्यतर क्षपक अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके ज्ञानावरणीयकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है।।२२।।

ओगाहणादिविसेसेहि (* अप्रतौ 'ओगाहणणादिविसेसोहि' इति पाठः।) भेदाभावपदुप्पायणट्ठं 'अण्णदरस्सेदि' भणिदं। अक्खवगपडिसेहफलो 'खवग' णिद्देसो। खीणकसाय दुचरिमसमयप्पहुडिहेट्ठिमखवगपडिसेहफलो 'चरिमसमयछदुमत्थस्से'त्ति णिद्देसो। चरिमसमयसुहुमसांपराइयजहण्णाणुभागबंधं घेत्तूण जहण्णसामित्तं तत्थ किण्ण परूविदं? ण, जहण्णाणुभागबंधादो तत्थतणसंताणुभागस्स अणंतगुणत्तुवलंभादो। खीणकसायचरिमसमए वि चिराणाणुभागसंतकम्मं चेव घेत्तूण जेण जहण्णं दिण्णं तेण खीणकसायपढमसमए जहण्णसामित्तं दिज्जदु, चिराणाणुभागसंतकम्मत्तं पडि भेदाभावादो त्ति? ण एस दोसो, अणुसमओवट्टणाघादेण अणुसमयमणंतगुणहीणं होदूण खीणकसायचरिमसमयपत्ताणुभागादो तस्सेव पढमसमयअणुभागस्स अणंतगुणदंसणादो।

अवगाहनादिक विशेषोंसे उत्पन्न विशेषताकी अविवक्षा बतलानेके लिए 'अन्यतर' पदका निर्देश किया है। क्षपक पदके निर्देशका प्रयोजन अक्षपकोंका प्रतिषेध करना है। क्षीणकषाय गुणस्थानके द्विचरम समयवर्ती आदि अधस्तन क्षपकोंका निषेध करनेके लिए 'अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके' ऐसा निर्देश किया है।

शंका -- अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके जघन्य अनुभागबन्धको ग्रहण कर वहाँ जघन्य स्वामित्व क्यों नहीं बतलाया?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, जघन्य अनुभागबन्धकी अपेक्षा वहाँ अनुभागका सत्त्व अनन्तगुणा पाया जाता है।

शंका -- क्षीणकषाय गुणस्थानके अन्तिम समयमें भी चूँकि चिरन्तन अनुभागके सत्त्वको लेकर ही जघन्य स्वामित्व दिया गया है, अतएव क्षीणकषायके प्रथम समयमें भी जघन्य स्वामित्व दिया जाना चाहिए था, क्योंकि, चिरन्तन अनुभागके सत्त्वकी अपेक्षा दोनोंमें कोई भेद नहीं है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, प्रत्येक समयमें होनेवाले अपवर्तनाघातके द्वारा प्रतिसमय अनन्तगुणहीन होकर क्षीणकषायके अन्तिम समयको प्राप्त हुए अनुभागकी अपेक्षा उसी गुणस्थानके प्रथम समयका अनुभाग अनन्तगुणा देखा जाता है।

तव्वदिरित्तमजहण्णा।।२३।।

उससे भिन्न उसकी अजघन्य वेदना होती है।।२३।।

सुगममेदं।

यह सूत्र सुगम है।

एवं दंसणावरणीय-अंतराइयाणं।।२४।।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय और अन्तरायकी जघन्य और अजघन्य वेदनाका कथन करना चाहिए।।२४।।

घादिकम्मत्तणेण अणुसमओवट्टणाए घादं घादिदूण खीणकसायचरिमसमए विणट्ठत्तणेण भेदाभावादो।

कारण कि एक तो ये दोनों घातिकर्म होनेसे ज्ञानावरणकी अपेक्षा इनमें कोई विशेषता नहीं है। दूसरे प्रत्येक समयमें होनेवाले अपवर्तनाघातके द्वारा घात होकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें विनष्ट हुए अनुभागकी अपेक्षा ज्ञानावरणसे इनमें कोई विशेषता नहीं है।

सामित्तेण जहण्णपदे वेयणीयवेयणा भावदो जहण्णिया कस्स?।।२५।।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें वेदनीयकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है?।।२५।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

अण्णदरखवगस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स असादावेदणीयस्स वेदयमाणस्स तस्स वेयणीयवेयणा भावदो जहण्णा।।२६।।

असातावेदनीयका वेदन करनेवाले अन्तिम समयवर्ती भवसिद्धिक अन्यतर क्षपकके वेदनीय वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है।।२६।।

ओगाहणादीहि विसेसाभावपदुप्पायणफलो 'अण्णदरस्से'त्ति णिद्देसो। अक्खवगपडिसेहफलो 'खवग'णिद्देसो। दुचरिमभवसिद्धियपडिसेहफलो चरिमसमयभवसिद्धियस्से त्ति णिद्देसो। भवसिद्धियदुचरिमसमए जहण्णसामित्तं किण्ण दिज्जदे? ण, तत्थ चरिमसमयसुहुमसांपराइएण बद्धसादावेदणीयउक्कस्साणुभागसंतकम्मस्स अत्थित्तदंसणादो। 'असादवेदगस्स' इति विसेसणं किमट्ठं कीरदे? सादं वेदयमाणस्स दुचरिमसमए उदयाभावेण विणासिदअसादस्स सादुवक्कस्साणुभागं धरेमाणचरिमसमयभवसिद्धियस्स वेदणीयजहण्णसामित्तविरोहादो। असादं वेदयमाणस्स पुण वेयणीयाणुभागो जहण्णो होदि, उदयाभावेण भवसिद्धियदुचरिमसमए विणट्ठसादाणुभागसंतत्तादो खवगसेडीए बहुसो घादं पत्तअणुभागसहिदअसादावेदणीयस्स चेव भवसिद्धियचरिमसमयदंसणादो। असादं वेदयमाणस्स सजोगिभगवंतस्स भुक्खा-तिसादीहि एक्कारसपरीसहेहि बाहिज्जमाणस्स कधं ण भुत्ती होज्ज? ण एस दोसो, पाणोयणेसु जादतण्हाए समोहस्स मरणभएण भुंजतस्स परीसहेहि पराजियस्स केवलित्तविरोहादो। संकिलेसाविणाभाविणीए भुक्खाए दज्झमाणस्स वि केवलित्तं जुज्जदि त्ति समाणो दोसो त्ति ण पच्चवट्ठेयं, सगसहायघादिकम्माभावेण णिस्सत्तित्तमावण्णअसादावेदणीयउदयादो भुक्खा-तिसाणमणुप्पत्तीए। णिप्फलस्स परमाणुपुंजस्स समयं पडि परिसदंतस्स कधं उदयववएसो? ण, जीव-कम्मविवेगमेत्तफलं दट्ठूण उदयस्स फलत्तब्भुवगमादो। जदि एवं तो असादवेदणीयोदयकाले सादावेदणीयस्स उदओ णत्थि, असादावेदणीयस्सेव उदओ अत्थि त्ति ण वत्तव्वं, सगफलाणुप्पायणेण दोण्णं पि सरिसत्तुवलंभादो? ण, असादपरमाणूणं व सादपरमाणूणं सगसरूवेण णिज्जराभावादो। सादपरमाणवो असादसरूवेण विणस्संतावत्थाए परिणमिदूण विणस्संते दट्ठूण सादावेदणीयस्स उदओ णत्थि त्ति वुच्चदे। ण च असादावेदणीयस्स एसो कम्मो अत्थि (असाद)-परमाणूणं

सगसरूवेणेव णिज्जरुवलंभादो। तम्हा दुक्खरूवफलाभावे वि असादावेदणीयस्स उदयाभावो जुज्जदि त्ति सिद्धं।

अवगाहना आदिसे होनेवाली विशेषता यहाँ विवक्षित नहीं यह बतलानेके लिए सूत्रमें 'अन्यतर' पदका निर्देश किया है। क्षपकके निर्देशका फल अक्षपकका प्रतिषेध करना है। अन्तिम समयवर्ती भवसिद्धिक कहनेका प्रयोजन द्विचरम समयवर्ती आदि भवसिद्धिकोंका प्रतिषेध करना है।

शंका -- द्विचरम समयवर्ती भवसिद्धिकके जघन्य स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, उसके अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक द्वारा बाँधे गये साता वेदनीयके उत्कृष्ट अनुभागका सत्त्व देखा जाता है।

शंका -- 'असाता वेदनीयका वेदन करनेवालेके' यह विशेषण किसलिए किया जा रहा है?

समाधान -- (नहीं, क्योंकि) जो साता वेदनीयका वेदन कर रहा है और जिसने द्विचरम समयमें उदयाभाव होनेसे असाता वेदनीयका नाश कर दिया है उस साता वेदनीयके उत्कृष्ट अनुभागको धारण करनेवाले अन्तिम समयवर्ती भवसिद्धिकके वेदनीयका जघन्य स्वामित्व माननेमें विरोध आता है। परन्तु असाताका वेदन करनेवालेके वेदनीयका अनुभाग जघन्य होता है, क्योंकि, एक तो उदयाभाव होनेके कारण भवसिद्धिकके द्विचरम समयमें साता वेदनीयके अनुभाग सत्त्वका विनाश हो जाता है और दूसरे, क्षपक श्रेणिमें बहुत बार घातको प्राप्त हुए अनुभागसहित असाता वेदनीयका ही भवसिद्धिकके अन्तिम समयमें सत्त्व देखा जाता है।

शंका -- असाता वेदनीयका वेदन करनेवाले तथा क्षुधा, तृषा आदि ग्यारह परीषहों द्वारा बाधाको प्राप्त हुए ऐसे सयोगिकेवली भगवानके भोजनका ग्रहण कैसे नहीं होगा?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जो भोजन-पानमें उत्पन्न हुई इच्छासे मोहयुक्त है तथा मरणके भयसे जो भोजन करता है, अतएव परीषहोंसे जो पराजित हुआ है ऐसे जीवके केवली होनेका विरोध है। संक्लेशके साथ अविनाभाव रखनेवाली क्षुधासे जलनेवालेके भी केवलीपना बन जाता है, इस प्रकार यह दोष समान ही है; ऐसा भी समाधान नहीं करना चाहिए, क्योंकि, अपने सहायक घातिया कर्मोंका अभाव हो जानेसे अशक्तताको प्राप्त हुए असाता वेदनीयके उदयसे क्षुधा व तृषाकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है।

शंका -- बिना फल दिये ही प्रतिसमय निर्जीर्ण होनेवाले परमाणुसमूहकी उदय संज्ञा कैसे बन सकती है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, जीव व कर्मके विवेकमात्र फलको देखकर उदयको फलरूपसे स्वीकार किया गया है।

शंका -- यदि ऐसा है तो असाता वेदनीयके उदयकालमें साता वेदनीयका उदय नहीं होता, केवल असाता वेदनीयका ही उदय रहता है ऐसा नहीं कहना चाहिए, क्योंकि, अपने फलको नहीं उत्पन्न करनेकी अपेक्षा दोनोंमें ही समानता पायी जाती है।

समाधान -- नहीं, क्योंकि, तब असाता वेदनीयके परमाणुओंके समान साता वेदनीयके परमाणुओंकी अपने रूपसे निर्जरा नहीं होती। किन्तु विनाश होनेकी अवस्थामें असाता रूपसे परिणमन कर उनका विनाश होता है यह देखकर सातावेदनीयका उदय नहीं है, ऐसा कहा जाता है। परन्तु असाता वेदनीयका यह क्रम नहीं है, क्योंकि, तब असाताके परमाणुओंकी अपने रूपसे ही निर्जरा पायी जाती है। इस कारण दुःखरूप फलके अभावमें भी असाता वेदनीयका उदय मानना युक्तियुक्त है, यह सिद्ध होता है।

विशेषार्थ -- साधारणतः सांसारिक सुख और दुःखकी उत्पत्तिमें साता वेदनीय और असाता वेदनीयका उदय निमित्त माना जाता है। सुखके साथ साता वेदनीयके उदयकी और दुःखके साथ असाता वेदनीयकी व्याप्ति है। यह व्याप्ति उभयतः मानी जाती है। इसलिए यह प्रश्न उठता है कि केवली जिनके असाता वेदनीयका उदय माननेपर उनके क्षुधा, तृषा और व्याधि आदि जन्य बाधा अवश्य होती होगी, अन्यथा उनके असाता वेदनीयका उदय मानना निष्फल है। समाधान यह है कि कोई भी कार्य बाह्य और अन्तरंग दो प्रकारके कारणोंसे होता है। यहाँ मुख्य कार्य क्षुधाजन्य बाधा है। यदि शरीरके लिए भोजनकी आवश्यकता हो और ऐसी अवस्थामें भोजनकी इच्छा हो तो क्षुधाजन्य बाधा होती है और इसमें असाता वेदनीयका उदय कारण माना जाता है। किन्तु केवली जिनका औदारिक शरीर त्रस और निगोदिया जीवोंसे रहित परमशुद्ध होता है, अतएव उनके शरीरको भोजन पानीकी आवश्यकता नहीं रहती और मोहनीयका अभाव हो जानेसे उनके भोजन और पानी ग्रहण करनेकी इच्छा भी नहीं होती, इसलिए उनके कदाचित् असाता वेदनीयका उदय रहनेपर भी क्षुधा-तृषाजन्य बाधा नहीं होती।

यही कारण है कि केवली जिनके क्षुधादिजन्य बाधाका अभाव कहा गया है। शेष स्पष्टीकरण मूलमें किया ही है।

तव्वदिरित्तमजहण्णा।।२७।।

इससे भिन्न उसकी अजघन्य वेदना होती है।।२७।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

सामित्तेण जहण्णपदे मोहणीयवेयणा भावदो जहण्णिया कस्स?।।२८।।

स्वामित्वमें जघन्य पदमें मोहनीयकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है?।।२८।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

अण्णदरस्स खवगस्स चरिमसमयसकसाइयस्स तस्स मोहणीयवेयणा भावदो जहण्णा।।२९।।

अन्तिम समयवर्ती सकषाय अन्यतर क्षपकके मोहनीयकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है।।२९।।

अंतोमुहुत्तमणुसमयओवट्टणाघादेण घादिदसेसअणुभागगहणट्ठं 'चरिमसमयकसाइस्स' इति णिद्दिट्ठं। सेसं सुगमं।

अन्तर्मुहूर्त कालतक प्रतिसमय अपवर्तनाघातके द्वारा घात करनेसे शेष रहे अनुभागका ग्रहण करनेके लिए 'अन्तिम समयवर्ती सकषायके' इस पदका निर्देश किया है। शेष कथन सुगम है।

तव्वदिरित्तमजहण्णा।।३०।।

इससे भिन्न उसकी अजघन्य वेदना होती है।।३०।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

सामित्तेण जहण्णपदे आउअवेयणा भावदो जहण्णिया कस्स? ।।३१।।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें आयुकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है? ।।३१।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

अण्णदरेण मणुस्सेण पंचिंदियतिरिक्खजोणिएण वा परियत्तमाणमज्झिमपरिणामेण अपज्जत्ततिरिक्खाउअं बद्धल्लयं जस्स तं संतकम्मं अत्थि तस्स आउअवेयणा भावदो जहण्णा।।३२।।

जो अन्यतर मनुष्य अथवा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाला जीव परिवर्तमान मध्यम परिणामोंसे अपर्याप्त तिर्यंच संबंधी आयुका बन्ध करता है उसके और जिसके इसका सत्त्व होता है उसके आयुकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है।।३२।।

अपज्जत्ततिरिक्खाउअं देव-णेरइया ण बंधंति त्ति जाणावणट्ठं मणुस्सेण 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिएण वा' त्ति वुत्तं। एइंदिय-विगलिंदिया वि अपज्जत्ततिरिक्खाउअं बंधंता अत्थि, तत्थ जहण्णसामित्तं किण्ण दिज्जदे? ण, आउअजहण्णाणुभागबंधकारणपरिणामाणं तत्थाभावादो। तत्थ णत्थि त्ति कधं णव्वदे? एदम्हादो चेव सुत्तादो। अणुसमयं वड्ढमाणा हायमाणा च जे संकिलेस-विसोहिपरिणामा ते अपरियत्तमाणा णाम। जत्थ पुण हाइदूण परिणामंतरं गंतूण एग-दोआदिसमएहि आगमणं संभवदि ते परिणामा परियत्तमाणा णाम। तेहि आउअं बज्झदि। तत्थ उक्कस्सा मज्झिमा जहण्णा त्ति तिविहा परिणामा। तत्थ अइजहण्णा आउअबंधस्स अपाओग्गं। अइमहल्ला वि अप्पाओग्गं चेव, साभावियादो। तत्थ दोण्णं विच्चाले ट्ठिया परियत्तमाणमज्झिमपरिणामा वुच्चंति। तत्थतणजहण्णपरिणामेहि तप्पाओग्गविसेसपच्चएहि जमपज्जत्ततिरिक्खाउअं बद्धल्लयं तस्स जहण्णाणुभागो होदि। जस्स तं संतकम्मं अत्थि तस्स वि।

अपर्याप्त तिर्यंचसम्बन्धी आयुको देव और नारकी जीव नहीं बाँधते यह जतलानेके लिए 'मनुष्य अथवा तिर्यंच योनिवाले' ऐसा कहा है।

शंका -- एकेन्द्रिय व विकलेन्द्रिय जीव भी अपर्याप्त तिर्यंचकी आयुको बाँधते हैं, इसलिए उनमें जघन्य स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, उनमें आयुके जघन्य अनुभागके बन्धमें कारणभूत परिणामोंका अभाव है।

शंका -- उनमें वे परिणाम नहीं हैं, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- इसी सूत्रसे जाना जाता है।

प्रतिसमय बढ़नेवाले या हीन होनेवाले जो संक्लेश या विशुद्धिरूप परिणाम होते हैं वे अपरिवर्तमान परिणाम कहे जाते हैं। किन्तु जिन परिणामोंमें स्थित होकर तथा परिणामान्तरको प्राप्त हो पुनः एक दो आदि समयों द्वारा उन्हीं परिणामोंमें आगमन सम्भव होता है उन्हें परिवर्तमान परिणाम कहते हैं। उनसे आयुका बन्ध होता है। उनमें उत्कृष्ट, मध्यम व जघन्यके भेदसे वे परिणाम तीन प्रकारके हैं। इनमें अति जघन्य परिणाम आयुबन्धके अयोग्य हैं। अत्यन्त महान परिणाम भी आयुबन्धके अयोग्य ही हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। किन्तु उन दोनोंके मध्यमें अवस्थित परिणाम परिवर्तमान मध्यम परिणाम कहलाते हैं। उनमें जघन्य परिणामोंसे तत्प्रायोग्य विशेष कारणों द्वारा जिसने अपर्याप्त सम्बन्धी तिर्यंच आयुको बाँधा है उसके आयुका जघन्य अनुभाग होता है, तथा जिसके उक्त अनुभागका सत्त्व होता है उसके भी आयुका जघन्य अनुभाग होता है।

तव्वदिरित्तमजहण्णा।।३३।।

इससे भिन्न उसकी अजघन्य वेदना होती है।।३३।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

सामित्तेण जहण्णपदे णामवेयणा भावदो जहण्णिया कस्स?।।३४।।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें नामकर्मकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है?।।३४।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

अण्णदरेण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तएण हदसमुप्पत्तियकम्मेण परियत्तमाणमज्झिमपरिणामेण बद्धल्लयं जस्स तं संतकम्ममत्थि तस्स णामवेयणा भावदो जहण्णा।।३५।।

हदसमुत्पत्तिक कर्मवाला अन्यतर जो सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तक जीव परिवर्तमान मध्यम परिणामोंके द्वारा नाम कर्मका बन्ध करता है उसके और जिसके इसका सत्त्व होता है उसके नाम कर्मकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है।।३५।।

ओगाहणादिविसेसाभावपदुप्पायणट्ठं 'अण्णदरेण' इति वुत्तं। बादरेइंदियअपज्जत्तादि-उवरिमजीवसमासपडिसेहट्ठं 'सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तएणे'त्ति भणिदं। उवरिमजीवसमासपडिसेहो किमट्ठं कीरदे? तत्थ जहण्णाणुभागासंभवादो। तं जहा -- ण ताव तत्थ सव्वविसुद्धेसु जहण्णसामित्तं, अप्पसत्थपयडिअणुभागादो अणंतगुणपसत्थपयडिअणुभागस्स अणंतगुणवड्ढिप्पसंगादो। ण सव्वसंकिलिट्ठेसु वि, अइतिव्वसंकिलेसेण असुहाणं पयडीणमणुभागवड्ढिप्पसंगादो। ण परियत्तमाणमज्झिमपरिणामेसु वि जहण्णसामित्तं संभवदि, सुहुमणिगोदजीवजीवअपज्जत्त-परियत्तमाणमज्झिमपरिणामेहिंतो अणंतगुणेहि जहण्णभावाणुववत्तीदो। 'हदसमुप्पत्तियकम्मेण' इति वुत्ते पुव्विल्लमणुभागसंतकम्मं सव्वं घादिय अणंतगुणहीणं कादूण 'ट्ठिदेण' इति वुत्तं होदि। तत्थ जहण्णुक्कस्सपरिणामणिराकरणट्ठं 'परियत्तमाणमज्झिमपरिणामेण' इति वुत्तं। जेण तं बद्धं जस्स तं संतकम्ममत्थि तस्स णामवेदणा भावदो जहण्णा।

अवगाहना आदिसे होनेवाली विशेषता यहाँ विवक्षित नहीं है यह बतलानेके लिए 'अन्यतर' पद कहा है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त आदि आगेके जीवसमासोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तक जीवके द्वारा' ऐसा कहा है।

शंका -- आगेके जीवसमासोंका प्रतिषेध किसलिए करते हैं?

समाधान -- चूँकि उनमें जघन्य अनुभागकी सम्भावना नहीं है, अतः उनका प्रतिषेध करते हैं। यथा -- उक्त जीवसमासोंमेंसे सर्वविशुद्ध जीवोंमें तो जघन्य स्वामित्व बन नहीं सकता, क्योंकि, ऐसा होनेपर अप्रशस्त प्रकृतियोंके अनुभागसे अनन्तगुणे प्रशस्त प्रकृतियोंके अनुभागमें अनन्तगुणी वृद्धिका प्रसंग आता है। सर्वसंक्लिष्ट जीवोंमें भी वह नहीं बन सकता, क्योंकि, अति

तीव्र संक्लेशके द्वारा अशुभ प्रकृतियोंके अनुभागमें वृद्धिका प्रसंग आता है। परिवर्तमान मध्यम परिणामयुक्त जीवोंमें भी जघन्य स्वामित्व सम्भव नहीं है, क्योंकि, सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तक जीवके परिवर्तमान मध्यम परिवर्तमान मध्यम परिणामोंकी अपेक्षा उन जीवोंके परिणाम अनन्तगुणे होते हैं, इसलिए वे जघन्य नहीं हो सकते।

'हतसमुत्पत्तिक कर्मवाले ' ऐसा कहनेपर पूर्वके समस्त अनुभागसत्त्वका घात करके और उसे अनन्तगुणा हीन करके स्थित हुए जीवके द्वारा, यह अभिप्राय समझना चाहिए। सूत्रमें जघन्य और उत्कृष्ट परिणामोंका निराकरण करनेके लिए 'परिवर्तमान मध्यम परिणामोंके द्वारा' ऐसा निर्देश किया है। जिसने उक्त अनुभागको बाँधा है व जिसके उसका सत्त्व है उसके नामकर्मकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है।

तव्वदिरित्तमजहण्णा।।३६।।

इससे भिन्न उसकी अजघन्य वेदना होती है।।३६।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

सामित्तेण जहण्णपदे गोदवेयणा भावदो जहण्णिया कस्स?।।३७।।

स्वामित्वसे जघन्य पदमें गोत्रकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य किसके होती है?।।३७।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

अण्णदरेण बादरतेउ-वाउजीवेण सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदेण सागारजागारसव्वविसुद्धेण हदसमुप्पत्तियकमेण उच्चागोदमुव्वेल्लिदूण णीचागोदं बद्धल्लयं जस्स तं संतकम्ममत्थि गोदवेयणा भावदो जहण्णा।।३८।।

सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुए साकार उपयोगसे संयुक्त, जागृत, सर्वविशुद्ध एवं हतसमुत्पत्तिक कर्मवाले जिस अन्यतर बादर तेजकायिक या वायुकायिक जीवके

उच्च गोत्रकी उद्वेलना होकर नीच गोत्रका बन्ध होता है व जिसके उसका सत्त्व होता है उसके गोत्रकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है।।३८।।

'बादरतेउ-वाउजीव'णिद्देसो किमट्ठं कीरदे? तत्थ बंधविवज्जियमुच्चागोदं णीचागोदादो सुहुत्तणेण महल्लाणुभागमुव्वेल्लिय गालणट्ठं। 'सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदेण' इति णिद्देसो अपज्जत्तकाले सव्वुक्कस्सविसोही णत्थि त्ति पज्जत्तकालसव्वुक्कस्सविसोहीणं गहणणिमित्तो। सागार-जागारद्धासु चेव सव्वुक्कस्सविसोहीयो सव्वुक्कस्ससंकिलेसा च होंति त्ति जाणावणट्ठं 'सागार-जागार'णिद्देसो कदो। सव्वुक्करस्स(* मुद्रितप्रतौ 'सव्वुक्कट्ठ' इति पाठः।)विसोहीए एत्थ किं पओजणं? बहुदरणीचगोदाणुभागघादो पओजणं। एवंविहस्स गोदवेयणा भावदो जहण्णा।

शंका -- बादर तेजकायिक व वायुकायिक जीवोंका निर्देश किसलिए किया गया है?

समाधान -- उनमें बन्धको प्राप्त न होनेवाले एवं नीच गोत्रकी अपेक्षा शुभरूप होनेसे विशाल अनुभागयुक्त उच्च गोत्रकी उद्वेलना करके गलानेके लिए उक्त जीवोंका निर्देश किया है।

चूँकि अपर्याप्त कालमें सर्वोत्कृष्ट विशुद्धि नहीं होती है अतः पर्याप्तकालमें होनेवाली सर्वोत्कृष्ट विशुद्धियोंका ग्रहण करनेके लिए 'सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुए' इस पदका निर्देश किया है। साकार उपयोग व जागृत समयमें ही सर्वोत्कृष्ट विशुद्धियाँ व सर्वोत्कृष्ट संक्लेश होते हैं, यह जतलानेके लिए 'साकार उपयोगयुक्त व जागृत' इस पदका निर्देश किया है।

शंका -- यहाँ सर्वोत्कृष्ट विशुद्धिका क्या प्रयोजन है?

समाधान -- नीच गोत्रके बहुतर अनुभागका घात करना ही उसका प्रयोजन है।

उक्त लक्षणोंसे संयुक्त जीवके गोत्रकी वेदना भावकी अपेक्षा जघन्य होती है।

तव्वदिरित्तमजहण्णा।।३९।।

इससे भिन्न उसकी अजघन्य वेदना होती है।।३६।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

एवं सामित्तं संगतोक्खित्तट्ठाणसंखाजीवसमुदाहाराणुओगद्दारं समत्तं।

इस प्रकार अपने भीतर स्थान, संख्या व जीवसमुदाहार अनुयोगद्वारोंको रखनेवाला अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

अप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि -- जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ।।४०।।

अल्पबहुत्वका प्रकरण है। इसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं -- जघन्य पदविषयक अल्पबहुत्व, उत्कृष्ट पदविषयक अल्पबहुत्व, जघन्य उत्कृष्ट पदविषयक अल्पबहुत्व।।४०।।

एत्थ तिण्णि चेव अणुयोगद्दाराणि होंति, एग-दोसंजोगे मोत्तूण तिसंजोगादीणमभावादो।

यहाँ तीन ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, एक और दो संयोगी भंगोंको छोड़कर यहाँ त्रिसंयोगी आदि भंगोंका अभाव है।

जहण्णवेदेण सव्वत्थोवा मोहणीयवेयणा भावदो जहण्णिया।।४१।।

जघन्य इस पदसे भावकी अपेक्षा मोहनीयकी जघन्य वेदना सबसे स्तोक है।।४१।।

कुदो? अपुव्व-अणियट्टिखवगगुणट्ठाणेसु संखेज्जसहस्सवारं खंडयघादेण अणंतगुणहीणं कादूण पुणो फद्दयाणुभागादो अणंतगुणहीणबादरकिट्टिसरूवेण कादूण पुणो तं मोहाणुभागं बादरकिट्टिगदं जहण्णबादरकिट्टीदो अणंतगुणहीणसुहुमकिट्टिसरूवेण कादूण पुणो सुहुमसांपराइय-गुणट्ठाणम्मि अंतोमुहुत्तकालमणंतगुणहीणकमेणमणुसमयमोवट्टिय सुहुमसांपराइयचरिमसमए उदयगदट्ठिदीए अणुभागस्स गहणादो।

क्योंकि, अपूर्वकरण व अनिवृत्तिकरण क्षपक गुणस्थानोंमें संख्यात हजार बार काण्डक घातके द्वारा अनुभागको अनन्तगुणा हीन करके, पश्चात् स्पर्धकगत अनुभागकी अपेक्षा उसे अनन्तगुणाहीन बादर कृष्टिरूपसे करके, तत्पश्चात् बादरकृष्टिगत उक्त मोहनीयके अनुभागको जघन्य बादर कृष्टिकी अपेक्षा अनन्तगुणा हीन सूक्ष्म कृष्टिरूपसे करके, पुनः सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानमें अन्तर्मुहूर्त कालतक प्रतिसमय अनन्तगुणाहीन क्रमसे अपवर्तित करके

सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें उदयप्राप्त स्थितिके अनुभागका यहाँ ग्रहण किया गया है।

अणुसमयओवट्टणा त्ति केरिसी? चरिमसमयअणियट्टिअणुभागादो सुहुमसाम्पराइयपढमसमए अणुभागो अणंतगुणहीणो होदि। बिदियसमए सो चेव अणुभागखंडयघादेण विणा अणंतगुणहीणो होदि। पुणो सो घादिदसेसो तदियसमए अणंतगुणहीणो होदि। एवं जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमओ त्ति णेदव्वं। एसो अणुसमयओवट्टणघादो णाम। एसो अणुभागखंडयघादो त्ति किण्ण वुच्चदे? ण, पारद्धपढमसमयादो अंतोमुहुत्तेण कालेण जो घादो णिप्पज्जदि सो अणुभागखंडयघादो णाम, जो पुण उक्कीरणकालेण विणा एगसमएणेव पददि सा अणुसमयओवट्टणा। अण्णं च, अणुसमयओवट्टणाए णियमेण अणंता भागा हम्मंति, अणुभागखंडयघादे पुण णत्थि एसो णियमो, छव्विहहाणीए खंडयघादुवलंभादो।

शंका -- प्रतिसमय अपवर्तना किस प्रकारकी होती है?

समाधान -- अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समय सम्बन्धी अनुभागकी अपेक्षा सूक्ष्मसाम्परायिकका प्रथम समय सम्बन्धी अनुभाग अनन्तगुणा हीन होता है। उसके द्वितीय समयमें वही अनुभाग काण्डकघातके बिना अनन्तगुणा हीन होता है। पुनः घात करनेके बाद शेष रहा वही अनुभाग तीसरे समयमें अनन्तगुणा हीन होता है। इस प्रकार सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समयतक जानना चाहिए। इसीका नाम अनुसमयापवर्तनाघात है।

शंका -- इसे अनुभागकाण्डकघात क्यों नहीं कहते?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, प्रारम्भ किये गये प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा जो घात निष्पन्न होता है वह अनुभागकाण्डकघात है, परन्तु उत्कीरणकालके बिना एक समय द्वारा ही जो घात होता है वह अनुसमयापवर्तना है। दूसरे, अनुसमयापवर्तनामें नियमसे अनन्त बहुभाग नष्ट होता है, परन्तु अनुभागकाण्डकघातमें यह नियम नहीं है, क्योंकि, छह प्रकारकी हानि द्वारा काण्डकघातकी उपलब्धि होती है।

विशेषार्थ -- यहाँ अनुभागकाण्डकघात और अनुसमयापवर्तना इन दोनोंमें क्या अन्तर है इसपर प्रकाश डाला गया है। काण्डक पोरको कहते हैं। कुल अनुभागके हिस्से करके एक एक हिस्सेका फलिक्रमसे अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा अभाव करना अनुभाग काण्डकघात कहलाता है और

प्रतिसमय कुल अनुभागके अनन्त बहुभागका अभाव करना अनुसमयापवर्तना कहलाती है। मुख्य रूपसे यही इन दोनोंमें अन्तर है।

अंतराइयवेयणा भावदो जहण्णिया अणंतगुणा।।४२।।

उससे भावकी अपेक्षा अन्तराय कर्मकी वेदना अनन्तगुणी है।।४२।।

कधं दोण्णं पयडीणमणुभागस्स घादिददेसस्स सरिसत्तं? ण एस दोसो, संसारावत्थाए समाणाणुभागाणमसुहत्तणेण समाणाणं सरिसाणुभागघादाणं (* अ प्रतौ 'त्तरिसणुभागघादाणं', प प्रतौ 'सरिसत्ताणुभागघादाणं' इति पाठः।) घादिदसेसाणुभागाणं सरिसत्तं पडि विरोहाभावादो। संसारावत्थाए दोण्णं पयडीणमणुभागो सरिसो त्ति कधं णव्वदे? केवलणाणावरणीयं केवदंसणावरणीयं असादवेदणीयं वीरियंतराइयं च चत्तारि वि तुल्लाणि त्ति चदुसट्ठिपदियमहादंडयसुत्तादो। सव्वमेदं जुज्जदे किंतु अंतराइयजहण्णाणुभागादो णाण-दंसणावरणाणुभागाणं जहण्णाणमणंतगुणत्तं ण घडदे, संसारावत्थाए अणुभागेण समाणाणं अणुभागखंडय-अणुसमयओवट्टणाघादेण सरिसाणं विसरिसत्तविरोहादो (* अ प्रतौ 'विरोहो त्ति' इति पाठः।) त्ति। होदि सरिसत्तं जदि सव्वघादित्तणेण वीरियंतराइयं केवलणाण-दंसणावरणीएहिं समाणं, ण च एवं वीरियंतराइयस्स सव्वत्थ खओवसमदंसणादो। तदो जेण वीरियंतराइयं देसघादिलक्खणं तेण एरंडदंडओ (* अ प्रतौ 'एदंडदंडओ' इति पाठः।) व्व असारत्तादो बहुगं घादिज्जदि, केवलणाण-दंसणावरणीयाणि पुण सव्वघादीणि वज्जसेलो व्व णिकाचिदत्तादो बहुगं ण घादिज्जंति। तेण अंतराइयजहण्णाणुभागादो णाणदंसणावरणीयजहण्णाणुभागाणमणंतगुणत्तं जुज्जदे।

शंका -- घात करनेके बाद शेष रहे इन दोनों प्रकृतियोंके अनुभागमें समानता किस कारणसे है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, संसार अवस्थामें ये दोनों प्रकृतियाँ समान अनुभागवाली हैं, अशुभ स्वरूपसे समान हैं एवं समान अनुभागघातसे संयुक्त हैं, अतः उक्त दोनों प्रकृतियोंके घात करनेके बाद शेष रहे अनुभागोंके समान होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

शंका -- संसार अवस्थामें इन दोनों प्रकृतियोंका अनुभाग समान होता है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- 'केवलज्ञानावरणीय, केवलदर्शनावरणीय, असातावेदनीय और वीर्यान्तराय ये चारों ही प्रकृतियाँ तुल्य हैं' इस चौंसठ पदवाले महादण्डकसूत्रसे जाना जाता है।

शंका -- यह तो सब बन जाता है, किन्तु अन्तरायके जघन्य अनुभागकी अपेक्षा इ ाानावरण और दर्शनावरणका जघन्य अनुभाग अनन्तगुणा होता है यह नहीं बनता, क्योंकि, ये तीनों कर्म संसार अवस्थामें अनुभागकी अपेक्षा समान हैं तथा अनुभागकाण्डक व अनुसमयापवर्तनाघातकी अपेक्षा भी समान हैं, अतएव उनके विसदृश होनेमें विरोध आता है?

समाधान -- यदि वीर्यान्तराय कर्म सर्वघातिरूपसे केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणके समान होता तो इन तीनोंमें समानता अनिवार्य थी। परन्तु ऐसा है नहीं। क्योंकि, वीर्यान्तरायका सर्वत्र क्षयोपशम पाया जाता है। अतएव चूँकि वीर्यान्तराय कर्म देशघाती लक्षणवाला है इस कारण वह एरण्डदण्डके समान निःसार होनेसे बहुत घाता जाता है, किन्तु केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण सर्वघाती हैं अतः वे वज्रशैलके समान निबिडरूपसे बन्धको प्राप्त होनेके कारण बहुत नहीं घाते जाते हैं इसलिए अन्तरायकर्मके जघन्य अनुभागकी अपेक्षा ज्ञानावरण और दर्शनावरणके जघन्य अनुभागका अनन्तगुणा होना उचित ही है।

आउववेयणा भावदो जहण्णिया अणंतगुणा।।४४।।

उनसे भावकी अपेक्षा आयुकर्मकी जघन्य वेदना अनन्तगुणी है।।४४।।

मणुसेण वा पंचिंदियतिरिक्खजोणीयेण वा परियत्तमाणमज्झिमपरिणामेण बद्धमपज्जत्ततिरिक्खाउअमणुभागेण जहण्णं। एदं तेहिंतो अणंतगुणं। कुदो? णाण-दंसणावरणीयअणुभागो व्व खंडयघादेहि अणुसमओवट्टणाघादेहि च खवगसेडीए अपत्ताणुभागघादत्तादो।

मनुष्य अथवा तिर्यंच योनिवाले जीवके द्वारा परिवर्तमान मध्यम परिणामोंसे बाँधी गयी अपर्याप्त तिर्यंच सम्बन्धी आयु अनुभागकी अपेक्षा जघन्य होती है। यह उपर्युक्त दोनों कर्मोंके जघन्य अनुभागसे अनन्तगुणी है, क्योकि, जिस प्रकार क्षपकश्रेणिमें ज्ञानावरण और दर्शनावरणका अनुभागकाण्डकघात व अनुसमयापवर्तनाघातके द्वारा घातको प्राप्त होता है उनके द्वारा आयुकर्मका अनुभाग घातको नहीं प्राप्त होता।

गोदवेयणा भावदो जहण्णिया अणंतगुणा।।४५।।

उससे भावकी अपेक्षा गोत्रकर्मकी जघन्य वेदना अनन्तगुणी है।।४५।।

बादरतेउ-वाउपज्जत्तएसु सव्वविसुद्धेसु हदसमुप्पत्तियकम्मेसु ओवट्टिदउच्चागोदेसु गोदाणुभागो जहण्णो जादो (* अ प्रतौ 'गोदाणभागो जहण्णेज्जादो' इति पाठः।)। एत्थ जदि वि संखेज्जसहस्साणुभागखंडयाणि पदिदाणि तो वि घादिदसेसाणुभागो आउअजहण्णाणुभागादो अणंतगुणो होदि। 'सव्वुक्कस्सतिरिक्खाउअणुभागादो सव्वुक्कस्सणीचागोदाणुभागो अणंतगुणो' त्ति चउसट्ठिपदियदंडये भणिदं। तेण आउअस्स जहण्णाणुभागबंधादो णीचागोदस्स जहण्णाणुभागबंधो अणंतगुणो त्ति णव्वदे। तत्तो णीचागोदजहण्णाणुभागो अणंतगुणो, बिट्ठाणसंतकम्मत्तादो।

जो सर्वविशुद्ध हैं, हतसमुत्पत्तिककर्मा हैं और जिन्होंने उच्च गोत्रकी उद्वेलना की है ऐसे बादर तेजकायिक व वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें गोत्र कर्मका अनुभाग जघन्य होता है। यहाँ यद्यपि संख्यात हजार अनुभागकाण्डकघात हुए हैं तो भी गोत्रकर्मका घात करनेके बाद शेष रहा अनुभाग आयुके जघन्य अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणा है। यतः चतुःषष्ठिपदिक दण्डकमें 'सर्वोत्कृष्ट तिर्यगायुके अनुभागसे सर्वोत्कृष्ट नीच गोत्रका अनुभाग अनन्तगुणा है' ऐसा कहा गया है, अतः इससे जाना जाता है कि आयुके जघन्य आयुबन्धकी अपेक्षा नीचगोत्रका जघन्य अनुभागबन्ध अनन्तगुणा है। उससे नीचगोत्रका जघन्य अनुभाग अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह द्विस्थान सत्कर्मरूप है।

णामवेयणा भावदो जहण्णिया अणंतगुणा।।४६।।

उससे भावकी अपेक्षा नामकर्मकी जघन्य वेदना अनन्तगुणी है।।४७।।

सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयम्मि हदसमुप्पत्तियकम्मम्मि परियत्तमाणमज्झिमपरिणामम्मि णामककम्माणुभागस्स जहण्णं जादं। एसो अणुभागो णीचागोदजहण्णाणुभागो अणंतगुणो। कुदो? जसकित्तियादीणं सुहपयडीणमणुभागस्स सव्वत्थ णीचागोदाणुभागादो (* अ प्रतौ 'णीचागोदाणुवलंभादो' इति पाठः।) अणंतगुणस्स विसोहीए घादाभावादो। अइसंकिलेसं णेदूण सुहपयडीणमणुभागे घादिदे वि ण लाभो अत्थि, संकिलेसेण अजसकित्तियादिअसुहपयडीणमणुभागस्स वड्ढिदंसणादो। परियत्तमाणमज्झिमपरिणामेहि

सुहासुहपयडीणमणुभागमहल्लवड्ढि-हाणीणमणिमित्तेहि परिणदस्स तेण सामित्तं दिण्णं। तदो बहुवड्ढि-हाणीणमभावादो णामवेयणाभावो अणंतगुणो त्ति सिद्धं।

हतसमुत्पत्तिकर्म और परिवर्तमान मध्यम परिणामोंसे संयुक्त जो सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्त जीव है उसके नाम कर्मका अनुभाग जघन्य होता है। यह अनुभाग नीच गोत्रके जघन्य अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणा होता है, क्योंकि, सर्वत्र नीचगोत्रके अनुभागसे अनन्तगुणा जो यशःकीर्ति आदि शुभ प्रकृतियोंका अनुभाग होता है उसका विशुद्धिके द्वारा घात नहीं होता। अति संक्लेशको प्राप्त कराकर शुभ प्रकृतियोंके अनुभागका घात करनेपर भी कोई लाभ नहीं है, क्योंकि, संक्लेशसे अयशःकीर्ति आदि अशुभ प्रकृतियोंके अनुभागमें वृद्धि देखी जाती है। इसीलिए जो परिवर्तमान मध्यम परिणाम शुभाशुभ प्रकृतियोंके अनुभागकी महान् वृद्धि व हानिमें निमित्त नहीं पड़ते उनसे परिणत हुए जीवको उसका स्वामी बतलाया है। अतएव बहुत वृद्धि व हानिका अभाव होनेसे नाम कर्मकी वेदना भावतः गोत्रकर्मकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती है, यह सिद्ध होता है।

वेदणीयवेदणा भावदो जहण्णिया अणंतगुणा।।४७।।

उससे भावकी अपेक्षा वेदनीय कर्मकी जघन्य वेदना अनन्तगुणी है।।४७।।

वेदणीयाणुभागो खवगसेडीए संखेज्जसहस्सअणुभागखंडयघादेहि घादं पत्तो त्ति। चिराणाणुभागादो अणंतगुणहीणो अजोगि(* अ प्रतौ 'अजागे' इति पाठः।)चरिमसमए एगणिसेयमवलंबिय ट्ठिदो कधं णामाणुभागदो अप(* अ प्रतौ 'अपज्जत्त' इति पाठः।)त्तखवगसेडिघादादो संसारिजीवखंडयघादेहि समुक्कस्सं पेक्खिदूण अणंतगुणहीणत्तमावण्णादो अणंतगुणो होज्ज? अण्णं च, वेदणीयउक्कस्साणुभागादो असादसण्णिदादो संसारावत्थाए जसकित्तिउक्कस्साणुभागो अणंतगुणो, सो कधं संसारिखंडयघादेहि खवगसेडिम्मि घादं पत्तअसादावेदणीयाणुभागादो अणंतगुणहीणो कीरदे? ण एस दोसो, ण केवलमकसायपरिणामो चेव अणुभागघादस्स कारणं, किं तु पयडिगयसत्तिसव्वपेक्खो परिणामो अणुभागघादस्स कारणं। तत्थ वि पहाणमंतरंगकारणं, तम्हि उक्कस्से संते बहिरंगकारणे थोवे वि बहुअणुभागघाददंसणादो, अंतरंगकारणे थोवे संते बहिरंगकारणे बहुए संते वि बहुअणुभागघादाणुवलंभादो। तदो णामाणुभागघादअंतरंगकारणादो

वेदणीयाणुभागघादअंतरंगकारणमणंतगुणहीणमिदि णामजहण्णा-णुभागादो वेदणीयजहण्णाणुभागस्स अणंतगुणत्तं जुज्जदे। एवं जहण्णअप्पाबहुअं समत्तं।

शंका -- यतः वेदनीय कर्मका अनुभाग क्षपकश्रेणिमें संख्यात हजार अनुभागकाण्डकघातोंके द्वारा घातको प्राप्त हो चुका है इसलिए जो चिरन्तन अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणा हीन होता हुआ अयोगिकेवलीके अन्तिम समयमें एक निषेकका अवलम्बन लेकर स्थित है वह भला जो क्षपकश्रेणिमें घातको नहीं प्राप्त हुआ है और जो संसारी जीवोंके काण्डकघातोंके द्वारा अपने उत्कृष्ट अनुभागकी अपेक्षा अनन्तगुणा हीन है, ऐसे नामकर्मके जघन्य अनुभागसे अनन्तगुणा कैसे हो सकता है? दूसरे, संसार अवस्थामें यशःकीर्तिका उत्कृष्ट अनुभाग असात संज्ञावाले वेदनीयके उत्कृष्ट अनुभागसे अनन्तगुणा होता है ऐसी अवस्थामें क्षपकश्रेणिमें घातको प्राप्त हुए असाता वेदनीयके अनुभागकी अपेक्षा संसारी जीवोंके काण्डकघातोंद्वारा यशःकीर्तिका उत्कृष्ट अनुभाग घातित होकर अनंतगुणा हीन कैसे किया जा सकता है कैसे किया जा सकता है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, केवल अकषाय परिणाम ही अनुभागघातका कारण नहीं है, किन्तु प्रकृतिगत शक्तिकी अपेक्षा रखनेवाला परिणाम अनुभागघातका कारण है। उसमें भी अन्तरंग कारण प्रधान है, उसके उत्कृष्ट होनेपर बहिरंग कारणके स्तोक रहनेपर भी अनुभाग घात बहुत देखा जाता है। तथा अन्तरंग कारणके बहुत होते हुए भी अनुभागघात बहुत नहीं उपलब्ध होता। यतः नामकर्मसम्बन्धी अनुभाग घातके अन्तरंग कारणकी अपेक्षा वेदनीय सम्बन्धी अनुभागके घातका अन्तरंग कारण अनन्तगुणा हीन है, अतः नामकर्मके जघन्य अनुभागकी अपेक्षा वेदनीयके जघन्य अनुभागका अनन्तगुणा होना उचित ही है।

इस प्रकार जघन्य अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवा आउववेयणा भावदो उक्कस्सिया।।४८।।

उत्कृष्ट पदका अवलम्बन लेकर भावकी अपेक्षा आयु कर्मकी उत्कृष्ट वेदना सबसे स्तोक है।।४८।।

कुदो? भवधारणमेत्तकज्जकारित्तादो।

क्योंकि, वह भवधारण मात्र कार्यको करनेवाली है।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयवेयणा भावदो उक्कस्सियाओ तिण्णि वि तुल्लाओ अणंतगुणाओ।।४९।।

भावकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट वेदनाएँ तीनों ही तुल्य होकर आयुकर्मकी उत्कृष्ट वेदनासे अनन्तगुणी हैं।।४९।।

केवलणाण-दंसणाणं समाणत्तणेण तदावरणाणुभागस्स वि होदु णाम समाणत्तं, किं तु अंतराइयाणुभागस्स ण समाणत्तं जुज्जदे; केवलणाण-दंसण-अणंतवीरियाणं समाणत्ताभावदो त्ति? ण एस दोसो, केवलणाण-दंसण-अणंतवीरियाणं समाणत्तब्भुवगमादो। कुदो समाणत्तं णव्वदे? एदम्हादो चेव सुत्तादो। ण च आवारयसत्तीए समाणाए संतीए तदावरणिज्जाणं विसरिसत्तं जुज्जदे, विरोहादो। कधं पुण आउअउक्कस्साणुभागादो अणंतगुणत्तं? ण अंतरंग बहिरंगपडिबद्धाणंतकज्जुवलंभादो।

शका -- यतः केवलज्ञान और केवलदर्शन दोनों ही समान हैं अतः केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणके अनुभागमें भी समानता रही आवे किन्तु अन्तरायके अनुभागको इनके समान मानना उचित नहीं है, क्योंकि, केवलज्ञान, केवलदर्शन और अनन्तवीर्यमें समानता नहीं है।

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, केवलज्ञान, केवलदर्शन और अनन्तवीर्यमें समानता स्वीकार की गयी है।

शंका -- उन तीनोंमें समानता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- वह इसी सूत्रसे जाना जाता है। और आवारकशक्तिके समान होनेपर उनके द्वारा आवरण करनेयोग्य गुणोंमें असमानता मानना उचित नहीं है, क्योंकि, वैसा माननेमें विरोध आता है।

शंका -- तो फिर आयुके उत्कृष्ट अनुभागकी अपेक्षा उनका अनुभाग अनन्तगुणा है यह कैसे सम्भव है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, अन्तरंग व बहिरंग कारणोंसे प्रतिबद्ध उनके अनन्त कार्य उपलब्ध होते हैं, इससे ज्ञात होता है कि आयुके उत्कृष्ट अनुभागकी अपेक्षा उनका अनुभाग अनन्तगुणा है।

मोहणीयवेयणा भावदो उक्कस्सिया अणंतगुणा।।५०।।

उससे भावकी अपेक्षा मोहनीयकी उत्कृष्ट वेदना अनन्तगुणी है ।।५०।।

कुदो? साभावियादो। ण च सहावो जुत्तिगोयरो, अग्गी दहणो वि संमारणमिच्चादिसु जत्तीए अणुवलंभादो।

कारण कि ऐसा स्वभाव है और स्वभाव युक्तिका विषय नहीं होता, क्योंकि, अग्नि दाहजनक होकर भी मृत्युदायक है इसमें कोई युक्ति नहीं पायी जाती।

णामा-गोदवेयणाओ भावदो उक्कस्सियाओ दो वि तुल्लाओ अणंतगुणाओ।।५१।।

उनसे भावकी अपेक्षा नाम व गोत्रकी उत्कृष्ट वेदनाएँ दोनों ही तुल्य होकर अनन्तगुणी हैं।।५१।।

कुदो? सुहपयडित्तादो। असुहपयडिअणुभागादो सुहपयडीणमणुभागो किमट्ठमणंतगुणो? ण, साभावियादो। न हि स्वभावाः परपर्यनुयोगार्हा।

क्योंकि, ये दोनों शुभ प्रकृति हैं।

शंका -- अशुभ प्रकृतियोंके अनुभागसे शुभ प्रकृतियोंका अनुभाग अनन्तगुणा क्यों है?

समाधान -- नहीं, क्योकि, वैसा स्वभाव है, और स्वभाव प्रश्नके विषय नहीं हुआ करते।

वेदणीयवेयणा भावदो उक्कस्सिया अणंतगुणा।।५२।।

उनसे भावकी अपेक्षा वेदनीयकी उत्कृष्ट वेदना अनन्तगुणी है।।५२।।

जसकित्ति-उच्चागोदेहिंतो सादावेदणीयस्स पसत्थतमादो।

एवमुक्कस्साणुभागमप्पाबहुगं समत्तं।

कारण कि यशःकीर्ति और उच्चगोत्रकी अपेक्षा सातावेदनीय अतिशय प्रशस्त है।

इस प्रकार उत्कृष्ट अनुभाग अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवा मोहणीयवेयणा भावदो जहण्णिया।।५३।।

जघन्य-उत्कृष्ट पदसे भावकी अपेक्षा मोहनीयकी जघन्य वेदना सबसे स्तोक है।।५३।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

अंतराइयवेयणा भावदो जहण्णिया अणंतगुणा।।५४।।

उससे भावकी अपेक्षा अन्तरायकी जघन्य वेदना अनन्तगुणी है।।५४।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

णाणावरणीय-दंसणावरणीयवेयणाओ भावदो जहण्णियाओ दो वि तुल्लाओ अणंतगुणाओ।।५५।।

उससे भावकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीयकी जघन्य वेदनाएँ दोनों ही तुल्य होकर अनन्तगुणी हैं।।५५।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

आउअवेयणा भावदो जहणिया अणंतगुणा।।५६।।

उनसे भावकी अपेक्षा आयुकी जघन्य वेदना अनन्तगुणी है।।५६।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

णामवेयणा भावदो जहण्णिया अणंतगुणा।।५७।।

उससे भावकी अपेक्षा नामकर्मकी जघन्य वेदना अनन्तगुणी है।।५७।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

गोदवेयणा भावदो जहण्णिया अणंतगुणा।।५८।। (* अ आ का प्रतिषु ५७-५८ संख्याकमिदं सूत्रद्वयं विपरीतक्रमेणोपलभ्यते, किन्तु ता प्रतौ यथाक्रमेणेवास्ति तत्।)

उससे भावकी अपेक्षा गोत्रकर्मकी वेदना अनन्तगुणी है।।५८।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

वेदणीयवेयणा भावदो जहण्णिया अणंतगुणा।।५९।।

उससे भावकी अपेक्षा वेदनीयकी जघन्य वेदना अनन्तगुणी है।।५९।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

आउअवेयणा भावदो उक्कस्सिया अणंतगुणा।।६०।।

उससे भावकी अपेक्षा आयुकी उत्कृष्ट वेदना अनन्तगुणी है।।६०।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

णाणावरणीय-दंसणावरणीय-अंतराइयवेयणा भावदो उक्कस्सिया तिण्णि वि तुल्लाओ अणंतगुणाओ।।६१।।

उससे भावकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तरायकी उत्कृष्ट वेदनाएँ तीनों ही तुल्य होकर अनन्तगुणी हैं।।६१।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

मोहणीयवेयणा भावदो उक्कस्सिया अणंतगुणा।।६२।।

उनसे भावकी अपेक्षा मोहनीयकी उत्कृष्ट वेदना अनन्तगुणी है।।६२।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।